नवभारत
संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

## अभी से करें पेयजल संकट से निपटने की तैयारियां

भारतीय मौसम विभाग ने इस वर्ष सामान्य से अधिक तापमान की आशंका जताई है. ग्लोबल वार्मिंग और एल-नीनो जैसी वैश्विक जलवायु परिस्थितियों के कारण देश के अनेक हिस्सों में लू, सूखा और वर्षा के असमान वितरण का खतरा बढ़ गया है. बढ़ती गर्मी केवल असुविधा का विषय नहीं है, यह सीधे-सीधे पेयजल संकट, कृषि उत्पादन और जनस्वास्थ्य से जुड़ा प्रश्न है. इसलिए यह समय चेतावनी को गंभीरता से लेने और अभी से ठोस तैयारी करने का है.

भारत जल संसाधनों के मामले में पूरी तरह गरीब देश नहीं है. औसतन 110 सेंटीमीटर वर्षा के साथ हमें हर वर्ष लगभग 4000 घन किलोमीटर पानी प्राप्त होता है. यह मात्रा दुनिया के अनेक देशों से अधिक है. फिर भी विडंबना यह है कि बरसने वाले कुल पानी का लगभग 85 प्रतिशत समुद्र में बह जाता है और केवल 15 प्रतिशत ही हम संचित कर पाते हैं. परिणामस्वरूप थोड़ी सी कम बारिश भी जल संकट का रूप ले लेती है. देश के 13 राज्यों के 135 जिलों में करीब दो करोड़ हेक्टेयर कृषि भूमि ऐसे क्षेत्र में आती है जहां हर दस वर्षों में चार बार सूखे जैसी स्थिति बन जाती है. समस्या का मूल कारण केवल कम वर्षा नहीं, बल्कि कमजोर जल प्रबंधन है. यदि औसत से कुछ कम वर्षा भी हो और हम वर्षा जल संचयन, जल पुनर्भरण और वितरण का वैज्ञानिक प्रबंधन करें, तो संकट की तीव्रता कम की जा सकती है. आज भी देश का बड़ा हिस्सा मानसून पर निर्भर है. उत्तरी भारत में नदियों का लगभग 80 प्रतिशत जल जून से सितंबर के बीच बहता है, जबकि दक्षिणी राज्यों में यह आंकड़ा 90 प्रतिशत तक पहुंच जाता है. वर्ष के शेष आठ महीनों के लिए हमारे पास पर्याप्त संग्रहण क्षमता नहीं है. इसके अलावा

खेती के स्वरूप में आया बदलाव भी चिंता का विषय है. कम पानी में उगने वाले ज्वार, बाजरा, कोदो, कुटकी जैसे मोटे अनाज का रकबा घटा है, जबकि सोयाबीन, धान और अन्य अधिक पानी मांगने वाली फसलों का विस्तार हुआ है. इससे वर्षा पर निर्भरता बढ़ी है और भूजल दोहन तेज हुआ है. अनेक राज्यों में भूजल स्तर खतरनाक रूप से नीचे जा चुका है. ट्यूबवेल और बोरिंग की सुविधा ने जल उपयोग को आसान तो बनाया, पर संयम की परंपरा को कमजोर किया है.

ग्रामीण भारत में कभी तालाब, बावड़ी, कुएं और छोटी नदियां जल सुरक्षा की मजबूत कड़ी थीं. आज इनमें से अनेक या तो अतिक्रमण की भेंट चढ़ गए हैं या गंदे नालों में बदल चुके हैं. शहरीकरण, अवैज्ञानिक निर्माण और रेत खनन ने नदियों के प्राकृतिक मार्ग को बाधित किया है. यदि हम पारंपरिक जल स्रोतों का पुनर्जीवन नहीं करेंगे, तो हर गर्मी में टैंकरों और रेल से पानी पहुंचाने की विवशता बनी रहेगी.दरअसल,अब समय आ गया है कि जल प्रबंधन को आपदा प्रबंधन की तरह लिया जाए. प्रत्येक शहर और गांव में वर्षा जल संचयन अनिवार्य हो. सरकारी भवनों, स्कूलों और उद्योगों में रूफटॉप हार्वेस्टिंग को कड़ाई से लागू किया जाए. जलग्रहण क्षेत्रों का संरक्षण, छोटे बांध और चेकडैम का निर्माण, तथा भूजल पुनर्भरण अभियान को जनभागीदारी से जोड़ा जाए. साथ ही फसल विविधीकरण और सूखा सहनशील कृषि को नीति समर्थन दिया जाए.

पेयजल संकट कोई अचानक आने वाली आपदा नहीं, बल्कि धीरे-धीरे बढ़ती चुनौती है. यदि हमने अभी से तैयारी नहीं की, तो आने वाले वर्षों में यह सामाजिक और आर्थिक संकट का रूप ले सकती है. इसलिए सरकार, समाज और प्रत्येक नागरिक को मिलकर पानी की हर बूंद सहेजने का संकल्प लेना होगा. यही भविष्य की जल सुरक्षा का एकमात्र रास्ता है.

# भारतीय उच्च शिक्षा में ओबीई का महत्व

प्रो. चंद्र चारु त्रिपाठी

### कुशल पेशेवरों की आवश्यकता

आज की दुनिया में, जहां तकनीकी विकास तेजी से हो रहा है, हमें ऐसे पेशेवरों की जरूरत है जो समस्याओं को हल कर सकें, टीम में काम कर सकें, संवाद कर सकें, और सामाजिक एवं पर्यावरणीय जिम्मेदारियों को समझते हुए कार्य करें. परिणाम-आधारित शिक्षा यह सुनिश्चित करती है कि भारत के स्नातक न केवल डिग्रीधारी हों, बल्कि वे वास्तविक जीवन की चुनौतियों का समाधान करने में सक्षम, बहुविषयक और कुशल पेशेवर बनें. परिणाम-आधारित शिक्षा न केवल एक नई प्रणाली है, बल्कि यह एक आवश्यकता बन चुकी है. यह प्रणाली छात्रों को व्यावहारिक, जिम्मेदार और सक्षम पेशेवर बनाने की दिशा में काम करती है, जो न केवल भारत, बल्कि वैश्विक स्तर पर प्रभावी कार्य कर सकें. छात्रों, नियोक्ताओं और शैक्षिक संस्थानों के लिए यह एक उत्प्रेरक बन सकती है, जो अंततः समग्र समाज की बेहतरी में योगदान देगी.

आज के समय में, जब शिक्षा का उद्देश्य केवल डिग्री प्राप्त करना नहीं रह गया है, यह सवाल उठता है कि उच्च शिक्षा वास्तव में छात्रों को क्या सिखा रही है? क्या यह सिर्फ एक कागजी डिग्री पाने की प्रक्रिया है या फिर छात्रों को ऐसे व्यावहारिक कौशल सिखाए जाते हैं, जो उन्हें न केवल भारत में, बल्कि वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम बनाए? यह वही समय है जब परिणाम-आधारित शिक्षा (Outcome-Based Education) को समझना बेहद महत्वपूर्ण हो जाता है, जो आज के प्रमुख शिक्षण संस्थानों में एक क्रांतिकारी बदलाव के रूप में उभर रहा है.

**परिणाम-आधारित शिक्षा (ओबीई) का संकल्पना-** परिणाम-आधारित शिक्षा एक ऐसी प्रणाली है, जिसमें शिक्षा का ध्यान केवल पढ़ाई के तरीके या पाठ्यक्रम पर नहीं, बल्कि छात्रों द्वारा प्राप्त किए गए परिणामों पर केंद्रित किया जाता है. यह शिक्षा प्रणाली छात्रों के ज्ञान, कौशल, और क्षमताओं को वास्तविक जीवन में कार्य करने के लिए तैयार करती है. इसका में शिक्षा का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि छात्र न केवल अकादमिक डिग्री प्राप्त करें, बल्कि वे भविष्य में पेशेवर जीवन में सफल हो सकें.

**पुरानी शिक्षा व्यवस्था और नई प्रणाली में अंतर-** परंपरागत शिक्षा व्यवस्था में, एक छात्र चार साल में कॉलेज में समय बिताता है, सभी परीक्षाएं पास करता है, और डिग्री प्राप्त करता है. फिर वह सरकारी नौकरियों के लिए अर्हता प्राप्त कर लेता है, लेकिन वास्तविक कार्यस्थल पर उसे सफलता हासिल करने में दिक्कतों का सामना करना पड़ता है. उदाहरण स्वरूप, यदि किसी छात्र को सरकारी नौकरी के लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता मिलती है, लेकिन जब वह कार्यस्थल पर जाता है, तो उसे टीमवर्क, संवाद कौशल, या वास्तविक समस्याओं को हल करने में दिक्कतें होती हैं.

इसके विपरीत, परिणाम-आधारित शिक्षा में छात्रों को न केवल सिद्धांत, बल्कि वास्तविक कार्य, विश्लेषण और व्यावहारिक कौशल भी सिखाए जाते हैं. उदाहरण के लिए, एक इंजीनियरिंग छात्र को केवल गणित और विज्ञान के सिद्धांतों को पढ़ने के बजाय, उन्हें यह सिखाया जाता है कि इन सिद्धांतों का वास्तविक जीवन की समस्याओं में कैसे उपयोग किया जा सकता है.

**ओबीई में स्नातक छात्रों के लिए 11 महत्वपूर्ण कौशल-** परिणाम-आधारित शिक्षा प्रणाली में छात्रों को 11 महत्वपूर्ण कौशल सिखाए जाते हैं, जो उन्हें न केवल गहरे ज्ञान से संपन्न करते हैं, बल्कि व्यावहारिक रूप से कार्य करने के लिए भी तैयार करते हैं. इनमें गणित, विज्ञान और इंजीनियरिंग के सिद्धांतों का वास्तविक समस्याओं में उपयोग करने का कौशल, जटिल समस्याओं की पहचान और समाधान खोजने की क्षमता, नए और नवाचारी समाधानों का डिज़ाइन करना, डेटा का विश्लेषण कर सही निष्कर्षों तक पहुंचना, नवीनतम उपकरणों और तकनीकों का उपयोग करना, समाज और पर्यावरण पर इंजीनियरिंग समाधानों के प्रभाव को समझना, व्यवसायिक नैतिकता का पालन करना और विविधता का सम्मान करना शामिल है. इसके अलावा, छात्रों को टीम में प्रभावी ढंग से काम करने, तकनीकी विषयों को सरल भाषा में समझाने, परियोजना प्रबंधन और टीम नेतृत्व की क्षमता, और तकनीकी बदलावों के साथ खुद को अपडेट रखने और जीवन भर सीखने की आदतें भी सिखाई जाती हैं. इन कौशलों का समावेश छात्रों को न केवल अकादमिक दृष्टिकोण से मजबूत बनाता है, बल्कि उन्हें पेशेवर जीवन में सफल होने के लिए तैयार भी करता है.

**ओबीई के लाभ-** परिणाम-आधारित शिक्षा के छात्रों के लिए कई फायदे हैं. यह प्रणाली उन्हें स्पष्ट लक्ष्य प्रदान करती है, ताकि वे जान सकें कि क्या सीखना है और कैसे उसे लागू करना है. छात्रों को नियमित फीडबैक मिलता है, जिससे वे अपने सुधार की दिशा को जान सकते हैं. साथ ही, यह छात्रों को व्यावहारिक कौशल के जरिए नौकरी के लिए पूरी तरह तैयार करता है, जिससे उनका आत्मविश्वास भी बढ़ता है.

**(लेखक राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, भोपाल के निदेशक हैं)**

महाकौशल की डायरी

# फिर दिखी कांग्रेस में गुटबाजी..

अविनाश दीक्षित

जबलपुर में विगत दिनों जिला कांग्रेस कमेटी ग्रामीण के अध्यक्ष व पूर्व विधायक संजय यादव द्वारा बरगी बांध की दांई तट नहर के फूटने को लेकर आयोजित की गई पत्रकारवार्ता सुर्खियों में रही. वजह पार्टी के ही आला नेताओं द्वारा इसको लेकर तरह-तरह की चर्चाएं करना रहा. राजनैतिक गलियारों में जो चर्चाएं सार्वजनिक हुईं उनसे कांग्रेस में गुटबाजी की झलक एक बार फिर से दिखाई दी. चर्चाओं के मुताबिक जिला कांग्रेस कमेटी ग्रामीण के अध्यक्ष संजय यादव ने पत्रकारवार्ता में शहर कांग्रेस के कई वरिष्ठ नेताओं को नजरअंदाज किया. इसको लेकर वरिष्ठ नेताओं के चहेते नेताओं ने विरोध भी दर्ज कराया . बात संजय यादव के समर्थकों तक पहुंची तो सफाई का दौर शुरू हुआ और कहा गया कि बरगी नहर को लेकर ग्रामीण कांग्रेस की पत्रकारवार्ता थी. लेकिन इस सफाईनामा को शहर कांग्रेस कमेटी के दिग्गजों ने खारिज करते हुए कहा कि शहर कांग्रेस कमेटी जब भी किसी मुद्दे पर पत्रकारवार्ता आयोजित करती है तो उसमें ग्रामीण नगर अध्यक्ष को बकायदा तवज्जो दी जाती है फिर ऐसा क्या हुआ जो शहर के नेताओं की अनदेखी कर दी गई. फिलहाल यह विषय कितना गर्माएगा और पार्टी नेताओं के विरोध का असर ग्रामीण कांग्रेस अध्यक्ष पर कितना पड़ेगा और वह आगामी कोई भी प्रेसवार्ता आयोजित करेंगे तो क्या नगर कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं को आमंत्रित करेंगे या फिर ग्रामीण कांग्रेस के ही पदाधिकारियों को अहमियत दी जाएगी. ये आने वाला समय बताएगा. फिलहाल खबर तो ये भी है कि इस पूरे मामले की जानकारी जीतू पटवारी तक भी पहुंचा दी गई है.

### किसानों को प्रशासन ने दे दिया झूठा आश्वासन...?

पूर्व विधायक व जिला कांग्रेस ग्रामीण के अध्यक्ष संजय यादव ने किसानों के पक्ष में ऐसी बात का दावा कर दिया जिससे प्रशासनिक खेमे में भी हड़कंप मचा हुआ है. उनके दावे के अनुसार सगड़ा-झपनी के पास की बरगी बांध की दांई तट नहर प्रशासन के जिम्मेदार अधिकारी-कर्मचारियों की लापरवाही के कारण फूटी है ये कोई प्राकृतिक आपदा नहीं है. इसलिए नर्मदा घाटी विकास विभाग में नहर के पानी से बर्बाद हुई फसलों का आंकलन कर किसानों को किसी भी प्रकार का मुआवजा देने का प्रावधान नहीं है. बावजूद इसके एसडीएम अभिषेक सिंह व प्रशासन द्वारा प्रभावित किसानों को झूठा आश्वासन दिया गया कि फसलों का आंकलन कर उन्हें मुआवजा दिया जाएगा. इस दावे के बाद बरगी नहर से प्रभावित किसानों के माथे में चिंता की लकीरें और बढ़ गई हैं. उधर राजनैतिक गलियारों में चर्चाएं ये भी तेज हैं कि बजाय किसानों को राहत देने के इस मामले के दोषी अधिकारी-कर्मचारियों को बचाने का काम हो रहा है. विदित हो कि बरगी बांध की दांई तट नहर सतना, रीवा तक जाती है जहां पर इस नहर के माध्यम से पीने का और सिंचाई का पानी सप्लाई होता था. लेकिन 1 फरवरी को नहर के फूटने से पूरे हालात बिगड़ गए थे. नहर फूटने से जहां सैंकड़ों एकड़ की फसलें बर्बाद हो गई है तो वही हजारों एकड़ की फसल में सिंचाई का संकट बरकरार है. वर्तमान में जिस गति से बरगी बांध की दांई तट नहर का सुधार कार्य चल रहा है उसको लेकर ये कयास लगाए जाने लगे हैं कि गर्मी की दस्तक के बीच नहर शुरू होने में कम से कम 2 महीने लगेंगे. इससे जबलपुर एवं कटनी जिले की लाखों एकड़ की गेहूँ की फसलें तबाह होने का संकट बरकरार है.

### चपरासी, बाबू के भरोसे चल रहा स्वास्थ्य केंद्र...

नैक द्वारा ए प्लस ग्रेड प्राप्त रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय एक बार फिर से अराजकता, अव्यवस्था और लापरवाह प्रबंधन के लिए सुर्खियों में आ गया है. इस बार तो शिकायत भोपाल लेवल तक की गई है. वजह पिछले दो साल से रानीदुर्गावती विश्वविद्यालय परिसर स्थित स्वास्थ्य केंद्र में डॉक्टर की तैनाती न होना. आलम ये है कि चपरासी, बाबू के भरोसे ये स्वास्थ्य केंद्र चल रहा है. जबकि इस स्वास्थ्य केंद्र के भरोसे आरडीवीवी के छात्र, पुरूष व महिला छात्रावासी अधिक रहते हैं, लेकिन वर्तमान हालातों को देखते हुए ये सभी निजी अस्पताल की तरफ रूख करते भी नजर आ रहे हैं. इसी बीच विवि के छात्रों व कर्मचारियों द्वारा ये बताया गया कि जब इसमें डॉक्टर नहीं है तो स्वास्थ्य केंद्र को बंद कर दिया जाए. हैरानी की बात तो ये निकलकर आई कि स्वास्थ्य केंद्र में जब मरीज नहीं आ रहे हैं तो फिर दवाईयों के खरीदने का क्रम क्यों जारी है. समझा जा सकता है कि दवाईयों के नाम पर बड़ा खेल हो रहा है.

# सारी दुनिया में व्याप्त है रिश्वतखोरी

रिश्वतखोरी ऐसी विश्वव्यापी बीमारी है जिसकी कोई दवा नजर नहीं आती. ग्लोबल ट्रांसपेरेंसी रिपोर्ट 2025 में कहा गया है कि अमेरिका, यूरोप और एशिया में भ्रष्टाचार के मामले बढ़े हैं. नेता से लेकर प्रशासन भी इसमें लिप्त है. 26 एशियाई देशों में करप्शन के मामलों में भारत 22 वें नंबर पर है. समाजसेवी अन्ना हजारे के आंदोलन से देश में भ्रष्टाचार विरोधी माहौलबनने की उम्मीद थी लेकिन कुछ विभाग आज भी रिश्वतखोरी के लिए बदनाम हैं जिनमें पीडब्ल्यूडी, एक्साइज, पुलिस व आरटीओ का समावेश है.

अधिकांश सरकारी कर्मचारियों व अधिकारियों की मानसिकता ऐसी बन गई गई है कि ऊपरी आमदनी और कमीशन के बिना काम ही नहीं करते. पकड़े जाने और निलंबित होने की भी उन्हें शर्म नहीं है. रिश्वत को दस्तूर मान लिया गया है. नेताओं का भ्रष्टाचार करोड़ों में होता है. जांच एजेंसियों पर दबाव रहता है कि किस पर सख्ती करें और किस पर जांच धीमी कर दें. अंतरराष्ट्रीय सौदे में कमीशन को पे-ऑफ का नाम दिया जाता है. ऐसे सौदे में दलाल अपनी भूमिका निभाते हैं.

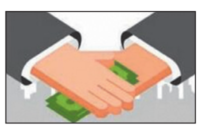

भ्रष्टाचार व्यक्ति की मानसिकता से जुड़ा है. मोटा वेतन-भत्ता पानेवाले भी रिश्वतखोरी करतेक हैं. उसे वह अपना अलिखित अधिकार समझते हैं. लालच व बेईमानी यदि किसी के चरित्र में हो तो उसका कौन सा इलाज है?

मीडिया की सुर्खियों में भ्रष्टाचार छाया रहता है लेकिन बहुत ही कम मामलों में दोषी को सजा मिल पाती है. योजनाएं समय पर पूरी न करके उनको लटकाया जाता है ताकि लागत बढ़ जाए और पेसा खाने का मौका मिले. भ्रष्टाचार व्यक्ति की मानसिकता से जुड़ा है. मोटा वेतन-भत्ता पानेवाले भी रिश्वतखोरी करते हैं. उसे वह अपना अलिखित अधिकार समझते हैं. लालच व बेईमानी यदि किसी के चरित्र में हो तो उसका कौन सा इलाज है? कानून में रिश्वत लेनेवाले के समान रिश्वत देनेवाला भी दोषी माना गया है.लेकिन जब समय पर काम नहीं किया जाता, फाइल आगे नहीं बढ़ती और बार बार चक्कर काटने की नौबत आती है तो लोग रिश्वत देने के लिए मजबूर हो जाते हैं.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

# पीवीआर में विज्ञापनों की भरमार करते रहो फिल्म का इंतजार

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, समय अत्यंत मूल्यवान है. टाइम इज मनी ! कहावत है- समय चूकी मुनि का पछतावे ! समय चूक जाने के बाद पछताकर कोई फायदा नहीं. जिस व्यक्ति में हौसला व आत्मविश्वास होता है वह विपरीत स्थिति में भी कहता है- अपना टाइम आएगा ! अमेरिका में 'टाइम' मैगजीन निकलती है. न्यूयॉर्क और मुंबई के टाइम में साढ़े दस घंटे का अंतर है. परीक्षा से लेकर रेलवे तक टाइम टेबल रहता है. टाइम का पाबंद होना बहुत अच्छी बात है. आप भी टाइम मैनेजमेंट करके चला करो. दफ्तरों में टाइमकीपर रहा करता है. वह खुद समय पर आता है या नहीं, किसे पता. टेबल पर रखी जाने वाली घड़ी को टाइमपीस कहते हैं.' हमने कहा, 'इधर उधर की बातों में बहुमूल्य टाइम बर्बाद मत कीजिए. मुद्दे की बात साफ-साफ कहेंगे तो अच्छा रहेगा!'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, समय का महत्व समझते हुए बेंगलुरू के एक व्यक्ति ने पीवीआर आइनॉक्स पर लगातार 25 मिनट विज्ञापन दिखाकर उसका समय बर्बाद करने का दावा किया. वह

फिल्म देखने गया था लेकिन शाम 4 बजे से 4.25 बजे तक विज्ञापन और ट्रेलर दिखाए जाते रहे. इसके बाद फिल्म शुरू की गई. उस व्यक्ति को 6.30 बजे काम पर लौटना था जिसमें वह लेट हो गया.' हमने कहा, 'यह कौन सी नई बात है! पीवीआर दर्शकों को इसकी आदत पड़ चुकी है. पॉपकार्न खाते रहो और विज्ञापन देखते हुए पिक्चर शुरू होने का इंतजार करते रहो.'

पड़ोसी ने कहा, 'उस व्यक्ति ने पीवीआर पर दावा दायर करते हुए कहा कि समय की इस बर्बादी से उसे असुविधा और मानसिक पीड़ा हुई. देर से काम पर पहुंचने से फटकार भी सुननी पड़ी. उसकी शिकायत सुनने के बाद जिला उपभोक्ता आयोग ने पीवीआर को आदेश दिया कि शिकायतकर्ता को 20,000 रुपये मुआवजा तथा शिकायत करने में आए खर्च के लिए 28,000 रुपये का अलग से भुगतान करे.' हमने कहा, 'पीवीआर की कमाई पॉपकॉर्न, समोसे, पानी की बोतल बेचने और ढेर सारे विज्ञापन दिखाने से होती है. यह पहला सजग दर्शक निकला जिसने समय की बर्बादी को मुद्दा बनाकर विज्ञापनों की भरमार के लिए पीवीआर को चुनौती दी. अधिकांश लोग उससे सहमत होंगे.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

## CROSS WORD 12170

- डॉ. सागर खादीवाला

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | | 3 | 4 | ■ | 5 | 6 |
| 7 | | ■ | 8 | | | | |
| | ■ | 9 | | | ■ | 10 | |
| 11 | 12 | | | ■ | 13 | | |
| ■ | 14 | | ■ | 15 | | ■ | ■ |
| 16 | | ■ | 17 | | | 18 | 19 |
| 20 | | | | ■ | 21 | | |
| 22 | | ■ | 23 | | | | ■ |

**ऊपर से नीचे**

1. जमी हुई वस्तु को निज स्थान से अलग करना, हटाना 2. फूलों का हार, लड़ी, पंक्ति 3. दानेदार, शुभचिंतक 4. एक पक्षी 5. नाखूनों से नोचना 6. झपट कर या शीघ्रता से आगे बढ़ना, टूट पड़ना 9. बंदर, भालू आदि का तमाशा दिखाने वाला बाजीगर 12. परम तेजस्वी 13. बेहोश, अचेत, व्याकुल (उर्दू) 15. गंदे जल के बहने का मार्ग 16. किसी मूर्ति के ऊपर दीपक घुमाने का कार्य, निराजन 17. मृगतृष्णा, धोखा देने वाली चीज (उर्दू) 18. इच्छा, मनोरथ (सं.) 19. रण, युद्ध, जंगल

**बाएं से दाएं**

1. मध्य प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री 5. शक्ति, ताकत 7. मौसी (उर्दू) 8. वात या वायु का शरीर में बढ़ जाना (सं.) 9. आक का पौधा 10. बिना पलक गिराए एक ही ओर देखना, स्थिर दृष्टि 11. रिश्तेदार, संबंधी 13. रूप या अस्तित्व देना, रचना, मूर्ख ठहराना 14. प्रचलित, प्रवाहित (उर्दू) 15. शब्द, संगीत 16. आमदनी 17. वह जो परामर्श देता हो (उर्दू) 20. कुछ लाल, सुर्खी लिए हुए 21. बौना, नाटा, विष्णु का एक अवतार 22. दो और एक 23. वर्षा का पानी गिरना, चारों ओर या ऊपर से अच्छी मात्रा में आना या गिरना

**Solution 12169**

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ह | की | क | त | न | ■ | भ | व |
| स्तां | ■ | ल | ■ | शा | ह | ज | हाँ |
| त | ल | ह | टी | ■ | स | न | ■ |
| र | ब | ■ | का | य | र | ■ | स |
| ण | ■ | अ | ■ | म | त | ल | ब |
| ■ | आ | च | म | न | ■ | ह | क |
| सु | धा | र | ना | ■ | सा | रा | ■ |
| धी | र | ज | ■ | खौ | फ | ना | क |

## ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

### आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में साझेदारी में विवाद एवं व्यवसाय में हानि होगी, वाणी में कठोरता तथा क्रोध में वृद्धि होगी, व्यय और संतान की चिन्ता से मन विचलित रहेगा, वर्ष के मध्य में राज्य सम्मान मिलेगा, सामाजिक प्रभाव बना रहेगा, शासन सत्ता का सुख प्राप्त होगा, अध्ययन में मन लगेगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को राज्य सम्मान मिलेगा, प्रभाव में वृद्धि होगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को साझेदारी में विवाद एवं व्यवसाय में नुकसान होगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को व्यय और संतान पक्ष की चिन्ता रहेगी, मन विचलित रहेगा, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को शासन सत्ता का सुख मिलेगा, अध्ययन में रूचि रहेगी, क्रोध की अधिकता रहेगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को पारिवारिक सुख और सौहार्द बना रहेगा, सिंह राशि के व्यक्तियों को परिश्रम अधिक करना होगा.

### आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वस्थ्य, सुन्दर, हष्टपुट मिलनसार होगा. इसके मित्रों की संख्या सीमित होगी. खेलों के प्रति रूचि रखने वाला, न्यायप्रिय होगा. किसी विशेष विद्या का ज्ञाता होगा.

### उदयकालीन ग्रह चाल

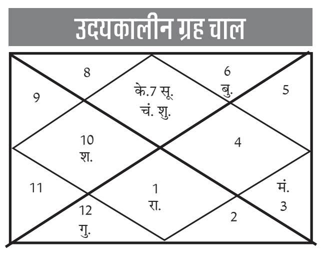


### पंचांग

रा.मि. 24 संवत् 2082 फाल्गुन कृष्ण एकादशी भृगुवासरे दिन 1/30, मूल नक्षत्रे दिन 3/37, वज्र योगे रात 3/6, बालव करणे सू.उ. 6/26, सू.अ. 5/34, चन्द्रचार धनु, पर्व- विजय एकादशी व्रत, शु.रा. 9,11,12,3,5,7 अ.रा. 10,1,2,4,6,8 शुभांक- 2,4,8.

### व्यापार भविष्य

फाल्गुन कृष्ण एकादशी को मूल नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, रूई, कपास, सूत, खल, बिनौला, सन, सरसों, अरंडी, मूँगफली, तेल, घी, में मंदी की चाल चलेगी. गेहूँ, चना, गुड, खांड, जायफल, हल्दी के भाव में तेजी होकर नरमी का रूख रहेगा.

**मेष-** कार्यक्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेंगे. लेनदेन में सावधानी रखें. अधिकारियों से अनुबंधों का लाभ मिलेगा. परिश्रम तथा भागदौड़ की अधिकता रहेगी.

**वृषभ-** युवा वर्ग वैवाहिक चर्चाओं से उत्साहित रहेंगे. रिश्ते मजबूत होंगे. आपके व्यापार व्यवसाय तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी. अनावश्यक परिश्रम करना होगा.

**मिथुन-** स्वास्थ्य संबंधी परेशानी से छुटकारा मिलेगा. सोच विचार कर निर्णय करें. नौकरी में कार्यो में अधिकता रहेगी. व्यापारिक क्षेत्र में सफलता के योग है.

**कर्क-** जल्दबाजी के बजाय सोच विचार कर निर्णय करें. नौकरी में प्रतिष्ठित पद प्राप्त होगा. धार्मिक कार्यो में रूचि रहेगी. व्यापारिक यात्रा का प्रोग्राम बन सकता है.

**सिंह-** बड़ी सौदा करने के लिये छोटी छोटी बातों को नजरअंदाज करना पड़ेगा, आपकी बुद्धिमानी तथा सूझबूझ से बिगडे काम बन जायेंगे. परिश्रम अधिक रहेगा.

**कन्या-** लोगों के साथ तालमेल बैठाकर चलने का प्रयास करें, स्वास्थ्य का ध्यान रखें. कार्यो में आशातीत सफलता के योग प्रबल है. प्रयासों में सफलता मिलेगी.

**तुला-** आवेश के बजाय नरमाई से काम लें, जल्दबाजी में कोई निर्णय न करें. जधनु जायजाद के कार्यो में विलंब होगा. अनावश्यक विवादों को टालना हितकर रहेगा.

**वृश्चिक-** कोर्ट कचहरी के मामलों में दूर रहें. सामाजिक प्रतिष्ठा तथा लाभदायक काम बनेंगे. मित्रता उपयोगी सिद्ध होगी. मनोंरंजन के अवसर मिलेंगे.

**धनु-** भावी लाभ की दृष्टि से नई योजना में निवेश कर सकते है. कैरियर की अनदेखी न करें. किसी नये कार्य को जहां तक बने टालना हितकर रहेगा.

**मकर-** महत्वपूर्ण लाभदायक प्रस्ताव हाथ से निकल सकते है. भूमि भवन संबंधी मामले सुलझेंगे. कार्यो में मनोंवाछित सफलता मिलेगी. रूका हुआ पैसा प्राप्त होगा.

**कुंभ-** आर्थिक स्थिति में उतार चढाव होने से महत्वपूर्ण फैसला लेने में देरी होगी. आपके बने बनाये कार्य अचानक रूक सकते है, जिससे मानसिक पीड़ा होगी.

**मीन-** भावनात्मक संबंधों को लेकर असमंजस्य रहेगा. जरूरत मंदों की मदद करने से नवीन अनुबंधों पर विचार विमर्श होगा. दूर दराज की यात्रा होगी.

## SUDOKU 7302

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | | 8 | 5 | 1 | 9 | 6 | | 7 |
| | | | | | 8 | | | 1 |
| | | 7 | 4 | 6 | | 8 | | 9 |
| 3 | 2 | | | | 7 | | | 8 |
| 1 | | 9 | | 4 | | 7 | | 5 |
| 4 | | | 2 | | | | 9 | 3 |
| 6 | | 3 | | 5 | 1 | 9 | | |
| 8 | | | 3 | | | | | |
| 7 | | 1 | 9 | 2 | 6 | 3 | | 4 |

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7301

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 7 | 1 | 9 | 8 | 5 | 3 | 2 | 6 | 4 |
| 4 | 5 | 3 | 6 | 2 | 9 | 7 | 1 | 8 |
| 6 | 2 | 8 | 4 | 7 | 1 | 9 | 5 | 3 |
| 9 | 8 | 2 | 7 | 3 | 5 | 1 | 4 | 6 |
| 1 | 3 | 6 | 9 | 4 | 8 | 5 | 7 | 2 |
| 5 | 7 | 4 | 1 | 6 | 2 | 8 | 3 | 9 |
| 8 | 4 | 7 | 5 | 9 | 6 | 3 | 2 | 1 |
| 3 | 6 | 1 | 2 | 8 | 7 | 4 | 9 | 5 |
| 2 | 9 | 5 | 3 | 1 | 4 | 6 | 8 | 7 |